

TATA STEEL FOUNDATION



जयपाल जुलियुस हन्ना साहित्य पुरस्कार 2023

26 नवंबर 2023 | रांची प्रेस क्लब हॉल, रांची (झारखंड)

Jaipal-Julius-Hannah
Literary Award 2023

26 November 2023
Ranchi Press Club Hall,
Ranchi (Jharkhand)



TATA STEEL FOUNDATION



हमारे देश में हमलोग 700 से अधिक समुदायों के तौर पर अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में रहते हैं। पुरखों ने हजारों साल पहले धरती के इन क्षेत्रों को अपने अनुकूल बनाया और उसे एक खास सांस्कृतिक परिवेश में ढाला। ताकि वे और उनकी आनेवाली पीढ़ियाँ एक परिवार, गोत्र और समुदाय की मजबूत इकाई के रूप में जी सकें। लेकिन कोई पांच हजार साल पहले आर्य, और लगभग पांच सौ साल पहले फ्रांसीसी-ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने हमारे नैसर्गिक सांस्कृतिक इलाकों का अतिक्रमण किया। यह उपनिवेशवादी नीति 'मुख्यधारा' और संस्कृतिकरण के नाम पर आजादी के बाद भी जारी है। लिहाजा हमारा समृद्ध वाचिक साहित्य और ज्ञान परंपरा लगातार खतरे का सामना कर रही है।

यह बहुत अफसोस की बात है कि संविधान निर्माताओं, चाहे वह नेहरू हों, डॉ. आंबेडकर हों, सरदार पटेल हों, राजेंद्र प्रसाद हों, या फिर राष्ट्रपिता गांधी, सभी ने आदिवासी हितों की अनदेखी की और भारत की नई संघीय गणतान्त्रिक व्यवस्था में आदिवासियों को हाशिए पर डाल दिया। संविधान-सभा में मौजूद आदिवासियों के सर्वोच्च नेता जयपाल सिंह मुंडा और उत्तर-पूर्व के आदिवासी प्रतिनिधि रेव. जेजेएम निकोल्स राय की अनुशंसाओं को एक सिरे से नकार दिया गया। नागा राष्ट्र के प्रखर नायक और योद्धा अंगामी जापू फिजो को निर्वासित जीवन गुजारना पड़ा।

आजादी के बाद हम आदिवासियों पर देश की अखंडता की आड़ में एक संस्कृति, एक भाषा, एक धर्म थोपने की प्रक्रिया शुरू हुई जो 21वीं सदी के आते-आते विकराल रूप ले चुकी है। हमें अपनी ही भाषा में बोलने-सुनने, पढ़ने-लिखने और जीने का कोई अवसर उपलब्ध नहीं है। राज्य और केंद्र की साहित्य अकादेमी में हमारे साहित्य के लिए 'स्पेस' नहीं है। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी भाषाओं और साहित्य के लिए प्रकाशन नीति और संस्थान नहीं हैं। हमारे लेखक अपनी ही धरती पर असम्मानित हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा (संकल्प ए/आरईएस/74/135) ने अनेक आदिवासी भाषाओं की गंभीर स्थिति पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए 2022 और 2032 के दशक को आदिवासी भाषाओं के अंतर्राष्ट्रीय दशक के रूप में घोषित किया है। जिससे उनके संरक्षण, पुनरुद्धार और संवर्धन के लिए हितधारकों और संसाधनों को जुटाया जा सके। लेकिन भारत सरकार अभी तक इस अंतर्राष्ट्रीय संकल्प से आंखें मूंदे हुए है।

औपनिवेशिक भाषाई नीति के खिलाफ सृजनात्मक संघर्ष प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन का प्राथमिक मुद्दा रहा है। इसी संघर्ष के तहत फाउंडेशन ने 2022 के अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस के अवसर पर आदिवासी भाषा, साहित्य और नये लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए 'जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड' की पहल की है।

अवार्ड क्यों ?

टाटा स्टील फाउंडेशन और झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा के सहयोग से प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन द्वारा आयोजित



इस अवार्ड के अंतर्गत देश के तीन आदिवासी रचनाकारों द्वारा आदिवासी मातृभाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी सहित किसी भी भारतीय भाषा व लिपि में रचित तीन मौलिक और अप्रकाशित पांडुलिपियों को पुरस्कृत और प्रकाशित किया जाता है।

देश के किसी भी आदिवासी समुदाय के नवोदित और वरिष्ठ लेखक कविता, कहानी, उपन्यास या सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर और किसी भी साहित्यिक विधा में इसके लिए अपनी मौलिक और अप्रकाशित पांडुलिपि भेज सकते हैं। पांडुलिपि पुरस्कार और प्रकाशन की यह योजना हर आयु वर्ग के आदिवासी रचनाकारों का स्वागत करती है।

‘जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य पुरस्कार’ के तहत प्रत्येक विजेता पांडुलिपि का प्रकाशन किया जाता है, लेखक को प्रकाशित पुस्तक की 50 कॉपी निःशुल्क उपहार दी जाती है, सम्मान समारोह में 100 प्रतियों की रॉयल्टी एडवांस में नकद प्रदान की जाती है और सालाना 10 प्रतिशत की रॉयल्टी का भुगतान किये जाने का प्रावधान है। इसके अलावा विजेता रचनाकारों को अंगवस्त्र, मानपत्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किए जाते हैं।

वर्ष 2022 का पहला ‘जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड’ इन तीन आदिवासी रचनाकारों की पांडुलिपियों को दिया गया था- ‘धरती के अनाम योद्धा’, कविता संग्रह (उज्जवला ज्योति तिग्गा, दिल्ली), ‘डकैत देवसिंग भील के बच्चे’, आत्मकथात्मक उपन्यास (सुनील गायकवाड़, महाराष्ट्र) और ‘कोंगकोग-फांगफांग’, कहानी संग्रह (रेमोन लोंगू, अरुणाचल प्रदेश)।

इस साल, 2023 का ‘जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड’ देश के निम्नांकित तीन युवा आदिवासी रचनाकारों को उनकी अप्रकाशित और मौलिक पांडुलिपियों को दिया जा रहा है-

1. ‘गोमपी गोमुक’: यह पूर्वी सियाङ, अरुणाचल प्रदेश के आदी समुदाय की डॉ. तुनुङ ताबिङ का पहला आदी-हिंदी द्विभाषी कविता संग्रह है।
2. ‘हेम्टू’: यह नंदूरबार, महाराष्ट्र के पावरा आदिवासी समुदाय के युवा कवि संतोष पावरा का हिंदी अनुवाद सहित पावरा/बारेला भाषा की कविताओं का संग्रह है।
3. ‘सोमरा का दिसुम’: यह असम के चाय बागान की सुप्रसिद्ध और वरिष्ठ मुंडा आदिवासी स्टोरीटेलर काजल डेमटा के बांग्ला कहानी संग्रह ‘चा बागिचार सांझ फजिर’ का हिंदी अनुवाद है। इसकी अनुवादक अलीपुरद्वार, पश्चिम बंगाल के उरांव समुदाय की डॉ. पूजा प्रभा एक्का हैं।

अवार्ड किसको ?

टाटा स्टील फाउंडेशन और झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा के सहयोग से प्यारा कैरेक्ट्र फाउंडेशन द्वारा आयोजित



सुबह 10.30 से 1.00 बजे

जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य पुरस्कार समारोह

1. पुरस्कार स्मरण: झाभासासं अखड़ा के संगी-साथी
 2. सुमङना (स्वागत):
 - ग्लोरिया सोरेड - चेयर पर्सन, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन
 - प्रतिनिधि टाटा स्टील फाउंडेशन, जमशेदपुर
 3. अवार्ड/अवार्डियों का परिचय: वंदना टेटे,
सेक्रेटरी, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन
 4. मुध गोतिया और जयपाल सिंह मुंडा, जुलियस तिग्गा,
हन्ना बोदरा के वंशजों द्वारा सम्मान वितरण
 5. अवार्डियों के संक्षिप्त वक्तव्य:
 - सुम्बरबो: डॉ. तुनुड ताबिड, पूर्वी सियाड (अरुणाचल प्रदेश)
 - सुम्बरबो: संतोष पावरा, नंदुरबार (महाराष्ट्र)
 - सुम्बरबो: डॉ. पूजा प्रभा एक्का, अलीपुरद्वार, (पश्चिम बंगाल)
 6. खास गोतिया वक्तव्य:
 - सुम्बरबो: सुकुमारन (बहुचर्चित कवि, वायनाड, केरल)
 7. मुध गोतिया उद्बोधन:
 - सुम्बरबो: डॉ. लानुसांगला जुदिदर
(प्रख्यात लेखिका, दीमापुर, नागालैंड)
- सत्र संचालन : सुम्बरबो: प्रीति रंजना डुंगडुंग
- 1.00 से 2.00 बजे: लंच

दोपहर 2.15 से 4.30 बजे

बहुभाषाई आदिवासी-देशज दुरड प्रस्तुति

सुमङना (स्वागत): डॉ. करम चंद्र अहीर,
अध्यक्ष - झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा
आमंत्रित कवियों द्वारा गीत-पाठ: स्वर्णलता आइंद, सनगी
समद, अगुस्तुस मुण्डू (मुण्डा); तारकेलेंग कुल्लू, जुएल
लकड़ा (खड़िया); सीता उरांव, सुखदेव उरांव (कुड़ुख);
डुमनी माई मुर्मू, गणेश मुर्मू, शिवनारायण हेम्बरोम,
लखिया टुडू (संताली); हलधर अहीर, अपराजिता मेहता
(पंचपरगनिया); सादरी (कर्मेली एक्का); डॉ. वृंदावन महतो
(कुड़मालि); जेठा असुर, रेशमी असुर (असुर); अणिमा
तेलरा, सुरेन्द्र बिरजिया (बिरजिया); दीपक कुमार दीपक
(खोरठा); साधना समद चाकी, जगन्नाथ हांसदा (हो).

सत्र संचालन: शांति सावैयां

धन्यवाद ज्ञापन: श्याम मुर्मू

26 नवंबर रविवार, 2023
रांची प्रेस क्लब हॉल, रांची (झारखंड)

प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन
203, पूर्वी जेल रोड, रांची झारखंड
9262975571
jjhannaaward@gmail.com
www.kharia.org
www.akhra.org.in

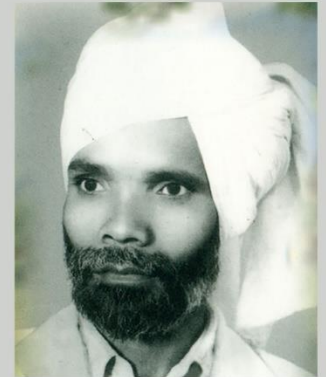


जयपाल सिंह मुंडा

भारतीय राजनीति में आदिवासी हक-हकूक के मरड गोमके (सर्वोच्च अगुआ). आदिवासियत के सिद्धांतकार और संविधान-निर्माता. 1928 की ओलंपिक में वर्ल्ड चौम्पियन भारतीय हॉकी टीम के कैप्टन. आदिवासी महासभा और झारखंड पार्टी के अध्यक्ष.

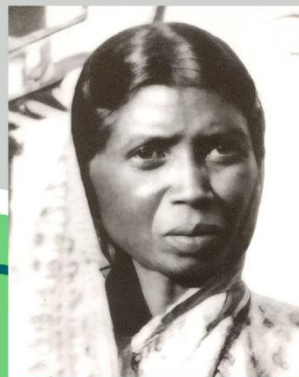
जुलियस तिग्गा

40 के दशक के आदिवासी आंदोलन के प्रखर बौद्धिक अगुआ. आदिवासी महासभा के महासचिव. गुलाम भारत में लिखने के लिए जेल जाने वाले पहले आदिवासी पत्रकार और संपादक. 50 के दशक में आदिवासी शिक्षा और संस्कृति का मॉडल खड़ा करने वाले पहले आदिवासी शिक्षाविद्.



हन्ना बोदरा

आदिवासी महासभा के महिला संघ की अध्यक्ष. भारत की आधुनिक राजनीतिक इतिहास में सबसे प्रखर लड़ाकू महिला. झारखंड के आदिवासी आंदोलन में महासभा और झारखंड पार्टी के बैनर तले मलिआओं को संगठित और उनकी अगुआई करने वाली सबसे तेजतर्रार आदिवासी नेत्री.



जयपाल, जूलियस और हन्ना





मुध गोतिया: **लानुसांगला त्जुदिर**

51 वर्षीय लानुसांगला नागालैंड की पहली और बहुचर्चित आदिवासी प्रकाशक हैं। आप 2008 में स्थापित हेरिटेज पब्लिशिंग हाउस (एचपीएच) की संस्थापक हैं जो अब तक 220 से ज्यादा किताबें प्रकाशित कर चुका है। लानुसांगला एक प्रसिद्ध लेखिका हैं जिन्होंने न केवल अपने लेखन के माध्यम से बल्कि अपने प्रकाशनों के द्वारा आदिवासियों की एक पूरी पीढ़ी के साहित्य को प्रोत्साहित किया है।



बीज वक्तव्य: **सुकुमारन**

सुकुमारन चालीगाथा, जिनका असली नाम बेथिमरन है, मलयालम और रावला भाषाओं में कविता और लघु कथाएँ लिखते हैं, जिनमें आदिवासियों के वास्तविक जीवन को दर्शाया गया है। इन्होंने पटकथाएँ और गीत भी लिखे हैं। वह कुरुवा द्वीप और कबानी नदी के पास, वायनाड के छोटे से गांव चलिगड्डा के रहने वाले हैं। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ कल्याणचोरु, मीनुकलुडे प्रसव मुरी, मज्जभाशा, कादु आदि हैं। वह पिछले दो दशकों से लिख रहे हैं और उन्होंने केरल के 40 आदिवासियों की कविताओं का पहला संग्रह 'गोत्र कविता' का संपादन और प्रकाशन किया है। केरल साहित्य अकादमी के सदस्य सुकुमारन एक लेखक होने के अलावा फिल्मों और थिएटर के कलाकार भी हैं।

जयपाल जुलियुस हन्ना
साहित्य समारोह 2023 गोतिया





1. गोमपी गोमुक (शब्द ध्वनि)

आदि/हिंदी द्विभाषी कविता संग्रह

डॉ. तुनुड ताबिड, आदी, पूर्वी सियाड (अरुणाचल)



2. हेम्टू (अतिक्रमण)

पावरी-बारेला/हिंदी द्विभाषी कविता संग्रह

संतोष पावरा, पावरा, लक्कड़कोट (महाराष्ट्र)



3. सोमरा का दिसुम : वरिष्ठ मुंडा स्टोरीटेलर काजल डेमटा के

बांग्ला कथा संग्रह 'चा बागिचार सांझ फजिर' का हिंदी अनुवाद

डॉ. पूजा प्रभा एक्का, उरांव, दक्षिण पनियालगुरी (पश्चिम बंगाल)

जयपाल जुलियुस हन्ना
साहित्य पुरस्कार 2023 विजेता





Jaipal Julius Hanna
Literary Award Ceremony 2022

